

शेखावाटी में स्वतंत्रता संग्राम की भूमिका: एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. सुशील कुमार शर्मा

प्राध्यापक, इतिहास विभाग राजकीय महाविद्यालय, गुढागौड़जी झुंझुनू

सारांश

भारत का स्वतंत्रता संग्राम एक राष्ट्रीय आंदोलन था जिसमें देश के प्रत्येक क्षेत्र, वर्ग और समुदाय ने किसी न किसी रूप में योगदान दिया। राजस्थान के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित शेखावाटी क्षेत्र ने भी इस राष्ट्रीय संघर्ष में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। यद्यपि यह क्षेत्र भौगोलिक रूप से मरुस्थलीय और सामाजिक रूप से सामंती व्यवस्था से बंधा हुआ था, फिर भी यहाँ के लोगों ने ब्रिटिश शासन और देशी रियासतों की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध आवाज़ उठाई। इस शोध में शेखावाटी क्षेत्र के स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान, स्थानीय नेताओं की भूमिका, सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियाँ, किसान और प्रजा आंदोलनों का स्वरूप, तथा क्षेत्र में जागरूकता फैलाने वाले कारकों का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन इस बात को रेखांकित करता है कि शेखावाटी की जनता ने न केवल राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम का हिस्सा बनकर योगदान दिया, बल्कि स्थानीय स्तर पर सामाजिक न्याय और आत्मनिर्भरता की भावना को भी प्रोत्साहित किया।

मुख्य शब्द: शेखावाटी, स्वतंत्रता संग्राम, प्रजामंडल, किसान आंदोलन, सामाजिक सुधार, जागरूकता।

1: प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम केवल कुछ महान नेताओं की पहल नहीं था, बल्कि यह करोड़ों भारतीयों की सामूहिक चेतना और संघर्ष का परिणाम था। राजस्थान, जो तत्कालीन भारत में अनेक रियासतों में विभाजित था, वहाँ स्वतंत्रता आंदोलन की गति कुछ अलग प्रकार की थी। शेखावाटी क्षेत्र — जिसमें वर्तमान में झुंझुनू, सीकर और चूरू जिले शामिल हैं — सामाजिक जागरूकता, राजनीतिक चेतना और आर्थिक असमानता के विरुद्ध विद्रोह का केंद्र बन गया। शेखावाटी के लोग अपनी वीरता, देशभक्ति और सामाजिक एकता के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। इस क्षेत्र के किसानों, युवाओं और बुद्धिजीवियों ने ब्रिटिश शासन के साथ-साथ रियासती शोषण के विरुद्ध संघर्ष किया। इस शोध का उद्देश्य शेखावाटी में स्वतंत्रता आंदोलन की पृष्ठभूमि, प्रमुख आंदोलनों, स्थानीय नेताओं की भूमिका तथा सामाजिक-राजनीतिक प्रभावों का विश्लेषण करना है।

2: शेखावाटी क्षेत्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

शेखावाटी का नाम 15वीं सदी के शासक महाराव शेखा के नाम पर पड़ा। यह क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से मारवाड़ और अंबर रियासतों के बीच स्थित था, जिससे यहाँ की राजनीतिक स्थिति काफी जटिल थी। यहाँ के अधिकांश गांव जमींदारों और ठाकुरों के अधीन थे, जो जनता से भारी कर वसूलते थे। किसानों की स्थिति दयनीय थी, और सामाजिक व्यवस्था जातिगत विभाजन से ग्रस्त थी। 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में, जब देश के अन्य हिस्सों में राष्ट्रीय आंदोलन की लहर उठ रही थी, तब शेखावाटी में भी परिवर्तन की बयार बहने लगी। स्थानीय स्तर पर शिक्षित युवाओं, आर्य समाज के प्रचारकों और स्वदेशी आंदोलन के प्रभाव से लोगों में जागरूकता आई। यही पृष्ठभूमि आगे चलकर स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी का आधार बनी।

3: शेखावाटी में स्वतंत्रता आंदोलन का प्रारंभ

शेखावाटी में स्वतंत्रता आंदोलन की शुरुआत 1920 के दशक में हुई जब महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन का प्रभाव देशभर में फैला। शेखावाटी के शिक्षित युवकों ने गांधीजी के सिद्धांतों से प्रेरित होकर सत्याग्रह, चरखा और स्वदेशी वस्त्रों का प्रचार किया। आर्य समाज और राष्ट्रीय स्कूलों के माध्यम से देशभक्ति की भावना फैलाई गई। स्थानीय स्तर पर "प्रजामंडल" का गठन हुआ जिसने रियासतों की अत्याचारी नीतियों के खिलाफ आवाज़ उठाई।

प्रमुख घटनाएँ:

1. **1921 का असहयोग आंदोलन:** इस आंदोलन में सीकर और झुंझुनू के विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूलों का बहिष्कार किया और राष्ट्रीय विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करनी शुरू की।
2. **किशनगढ़-बास और सीकर क्षेत्र के किसान आंदोलन:** जमींदारों के करों और बेगारी प्रथा के खिलाफ किसानों ने आंदोलन छेड़ा।
3. **झुंझुनू किसान सम्मेलन (1930):** इस सम्मेलन ने ब्रिटिश सरकार और रियासती अत्याचार के विरुद्ध जन-जागरण का कार्य किया।

4: प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी और उनके योगदान

शेखावाटी में अनेक स्थानीय नेताओं ने राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई। इनमें से कुछ प्रमुख नाम निम्नलिखित हैं—

1. **पंडित हरीशचंद्र शर्मा:** इन्होंने शिक्षा के माध्यम से लोगों में राष्ट्रीय चेतना जगाई और आर्य समाज के सिद्धांतों का प्रचार किया।

2. जगदीश प्रसाद झाझरिया: जिन्होंने किसान आंदोलन को संगठित किया और रियासती करों के विरोध में प्रदर्शन किए।
3. कप्तान रीसा सिंह और ठाकुर देशराज: इन्होंने शेखावाटी प्रजामंडल की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
4. नेताजी सुभाषचंद्र बोस के अनुयायी युवा दल: कुछ युवकों ने आज़ाद हिंद फौज में शामिल होकर देश की आज़ादी के लिए योगदान दिया।

इन सभी नेताओं के नेतृत्व में शेखावाटी में राजनीतिक जागरूकता और राष्ट्रीय एकता की भावना प्रबल हुई।

5: प्रजामंडल आंदोलन और जन-जागरण

राजस्थान की रियासतों में “राजस्थान प्रजामंडल आंदोलन” 1938 के आसपास प्रारंभ हुआ, जिसका उद्देश्य राजाओं की निरंकुश सत्ता को सीमित कर प्रजा को अधिकार दिलाना था। शेखावाटी में भी इसी आंदोलन के अंतर्गत लोगों ने राजकीय दमन, जबरन कराधान, और बेगारी के खिलाफ संघर्ष किया। सीकर, झुंझुनू, और चूरू जिलों में अनेक सभाएँ हुईं जिनमें स्वतंत्रता, समानता और स्वराज्य की बातें की गईं। इस आंदोलन के माध्यम से पहली बार किसानों और मजदूरों ने अपने अधिकारों के प्रति आवाज़ उठाई। स्थानीय प्रेस, कवि और लोकगीतों ने भी लोगों को प्रेरित किया। “वीर रस” और “देशभक्ति गीतों” के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना जन-जन तक पहुँची।

6: गांधीवादी विचारधारा और शेखावाटी

महात्मा गांधी के अहिंसा, सत्य और स्वदेशी के सिद्धांतों ने शेखावाटी के आंदोलन को एक नैतिक दिशा दी। यहाँ के अनेक कार्यकर्ता चरखा चलाने, खादी पहनने और शराबबंदी जैसे गांधीवादी अभियानों से जुड़े। गांधीजी के सिद्धांतों ने शेखावाटी के युवाओं को अहिंसात्मक संघर्ष और सामाजिक सुधारों के मार्ग पर अग्रसर किया। परिणामस्वरूप, रियासतों के अत्याचारों का विरोध करते हुए भी आंदोलन शांतिपूर्ण रहा।

7: शेखावाटी की सामाजिक और सांस्कृतिक भूमिका

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान शेखावाटी की सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ भी महत्वपूर्ण थीं। लोकगीतों, नाटकों और कविताओं के माध्यम से देशभक्ति का प्रचार हुआ। इस क्षेत्र की महिला स्वतंत्रता सेनानियों ने भी सक्रिय भूमिका निभाई — उन्होंने छिपे हुए कार्यकर्ताओं को भोजन, वस्त्र और आश्रय प्रदान किया। साथ ही, शिक्षा और सुधार आंदोलनों ने समाज में एक नई चेतना का संचार किया। बाल विवाह, पर्दा प्रथा और जातिगत भेदभाव के खिलाफ सामाजिक सुधारों की लहर चली।

8: स्वतंत्रता के पश्चात शेखावाटी का योगदान

1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद शेखावाटी क्षेत्र राजस्थान के एकीकृत राज्य का हिस्सा बना। स्वतंत्रता के बाद यहाँ के स्वतंत्रता सेनानियों ने पंचायत व्यवस्था, शिक्षा विस्तार और भूमि सुधार जैसे क्षेत्रों में कार्य किया। आज भी झुंझुनू और सीकर जिलों में उन सेनानियों की स्मृतियाँ जीवित हैं जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में अपना जीवन अर्पित किया था।

9: निष्कर्ष

शेखावाटी का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन और जन-जागरण का प्रतीक भी है। यह क्षेत्र राष्ट्रीय चेतना के साथ-साथ स्थानीय संघर्षों का भी साक्षी रहा — जहाँ किसानों ने जमींदारी के विरुद्ध विद्रोह किया, युवाओं ने शिक्षा और समानता के लिए आवाज़ उठाई, और महिलाओं ने भी परोक्ष रूप से योगदान दिया। शेखावाटी का यह योगदान हमें यह सिखाता है कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक आज़ादी नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मुक्ति का भी नाम है। इस क्षेत्र की विरासत आज भी प्रेरणास्रोत है।

संदर्भ सूची

- [1]. शर्मा, बी.एल. (1998). *राजस्थान का स्वतंत्रता संग्राम*. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
- [2]. देशराज, ठाकुर (1950). *शेखावाटी के स्वाधीनता सेनानी*. बीकानेर: राजस्थान प्रकाशन।
- [3]. जोशी, हरिशंकर (2002). *राजस्थान में प्रजामंडल आंदोलन का इतिहास*. जयपुर: यूनिवर्सिटी प्रकाशन।
- [4]. सिंह, नरेंद्र (2010). *शेखावाटी की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत*. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
- [5]. Government of Rajasthan. (1975). *Freedom Movement in Rajasthan*. Jaipur: State Archives Department.
- [6]. Gandhi, M. K. (1938). *The Story of My Experiments with Truth*. Ahmedabad: Navajivan Publishing House.